Survey) तथा संगणना सर्वेक्षण (Census Survey) में भी बाँटा जा सकता है।

सर्वेक्षण अनुसंधान की विशेषताएँ (Characte of Survey Research)

(1) सर्वेक्षण की प्रकृति अनुप्रस्थ (Cross-Sectional) है।

(2) सर्वेक्षण के लिए सुपरिभाषित समस्या व स्पष्ट उद्देश्यों का निर्धारण जरुरी है।

(3) सर्वेक्षण में समंको के संकलन के लिए बड़े आकार के प्रतिदर्श को लिया जाता है।

(4) सर्वेक्षण में वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय व वैध समंको को एकत्रित किया जाता है।

(5) सर्वेक्षण समंकों का विश्लेषण पर्याप्त सावधानी से करता है।

(6) सर्वेक्षण प्रायः वैज्ञानिक नियमों या सिद्धान्तों के निरूपण का दावा नही करते है।

(7) सर्वेक्षण प्रायः मात्रात्मक प्रकार के होते है।

(8) सर्वेक्षण सरल या जटिल किसी भी प्रकार के हो सकते है।

(9) सर्वेक्षण ज्ञान सृजन की दिशा में योगदान देते है।

Scanned by CamScanner

Steps in the Process of Survey Research

(सर्वेक्षण अनुसंधान प्रक्रिया के सोपान)

Step-1

- (a) सर्वेक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करना
- (b) परिकल्पनाओं की रचना करना
- (c) सर्वेक्षण के प्रकार का निर्धारण करना
- (d) प्रत्युत्तरों के प्रकारो को चिन्हित करना
- (e) सर्वेक्षण अभिकल्प तैयार करना

↓

Step-2

- (a) लक्ष्य जनसंख्या का निर्धारण
- (b) प्रतिचयन प्रारूप तैयार करना (Sample Frame)
- (c) प्रतिदर्श का आकार व तरीका निर्धारित करना
- (d) प्रतिदर्श का चयन करना
- (e) मापन उपकरण तैयार करना

↓

Step-3

- (a) प्रत्युत्तरदाताओं तक पहुँचना
- (b) संमंक संकलन हेतु मापन उपकरण प्रशासित करना
- (c) संमंको की स्कोरिंग, सारणीयन व सम्पादन करना

↓

Step-4

- (a) संमंको की कम्प्यूटर में प्रविष्टि करना
- (b) प्रविष्ट संमंको की जाँच करना
- (c) संमंको का सांख्यिकीय विश्लेषण करना

Scanned by CamScanner

Step-5

(a) परिकल्पनाओं का परिक्षण करना।
(b) परिणामों को प्रस्तुत करना।

↓

Step-6

(a) अनुसंधान प्रतिवेदन तैयार करना
(b) आलोचना व मूल्यांकन हेतु परिणामों को संचरित करना।

Limitation of Survey Research
(सर्वेक्षण अनुसंधान की सीमाएँ)

(1) कार्य प्रणाली की जटिलता (Complexity in Procedure)

(2) सीमित अध्ययन क्षेत्र (Limited Field of Study)

(3) श्रम, समय व धन का अधिक व्यय (Expensive in Term of Labour, Time and money)

(4) अदृश्य कारकों का अध्ययन असम्भव (Incapability of Studying Unvisible factors)

(5) सन्देहास्पद परिणाम (Doubtful Results)

Scanned by CamScanner

(Correlation Research)

सह-सम्बंधात्मक अनुसंधान

सहसम्बन्धात्मक अनुसंधान से तात्पर्य उन अध्ययनों से होता है जिनमें चरो के बीच के सम्बध की प्रखरता व दिशा को मात्रात्मक रूप से स्पष्ट किया जाता है।

सहसम्बन्ध अनुसंधान चरो के बीच सहसम्बन्ध की मात्रा बताने के द्वारा स्पष्ट करते है कि एक चर में परिवर्तन का दूसरे चरों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है जैसे- कक्षा में होने वाली शैक्षिक अन्तर्क्रिया को अध्यापक व्यवहार तथा छात्र व्यवहार में विभक्त किया जा सकता है। अध्यापक व्यवहार को अध्यापक के व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, सृजनात्मक, प्रभावशीलता, मूल्य आदि में छात्र व्यवहार को छात्रो के व्यक्तित्व, अधिगम शैली, शैक्षिक सम्प्राप्ति, बुद्धि आदि में बांटा जा सकता है। यदि इन विभिन्न चरो के बीच सहसम्बध का अध्ययन किया जाए तो उसे सहसम्बन्धात्मक अनुसंधान कहा जायेगा। इसके प्रायः दो उद्देश्य होते है।-

1. चरो के बीच सम्बध की मात्रा एवं दिशा ज्ञात करने के लिए।
2. सम्बधों के आधार पर पूर्व कथन करने के लिए।

Scanned by CamScanner

दो चरो के बीच सहसम्बंध तीन प्रकार का हो सकता है -

① धनात्मक सहसम्बंध (Positive correlation) →
जब एक चर के मान में वृद्धि होने पर दूसरे चर के मान में भी वृद्धि होती है अर्थात् जब दोनो चरो के मान मे परिवर्तन एक ही दिशा में तो ऐसी स्थिति धनात्मक सह सम्बंध की होती है।

② ऋणात्मक सहसम्बंध (Negative correlation) →
जब एक चर में (परिवर्तन अर्थात्) वृद्धि होने पर दूसरे चर में कमी हो तो वह ऋणात्मक सह-सम्बंध होगा। अर्थात् यदि दोनो चरो के मान में होने वाला परिवर्तन विपरीत दिशा में हो वहाँ -ve सह सम्बंध कहलाता है।

③ शून्य सहसम्बंध (Zero correlation) →
जब एक चर के मान में वृद्धि होने पर दूसरे चर के मान में कोई परिवर्तन नहीं होता तो वह शून्य सह-सम्बन्ध कहलाता है।

सहसम्बंध का अधिकतम मान +1 तथा न्यूनतम मान -1 होता है अर्थात् इसका मान ±1 के मध्य होता है।

यदि $r = +1$ (पूर्ण धनात्मक सह सम्बन्ध)

$r = -1$ (पूर्ण ऋणात्मक सह-सम्बंध)

$r = 0$ (सह सम्बंध का अभाव)

Scanned by CamScanner